C-3 B.Ed - I[st] (2019-2021)

विचार गोष्ठी की भूमिकाएँ (Roles in Seminar) :—

विचार गोष्ठी के आयोजन मे चार भूमिकाये निभानी होती है—

1 - अनुदेशन / व्यवस्थापक (Instructor / Organizer)
2 - अध्यक्ष (President or Chairman)
3 - वक्तागण (Speakers)
4 - भागीदार (Participants)

विचार गोष्ठी के प्रकार (Types of Seminar)

1 - लघु विचार गोष्ठी (Mini Seminar)
2 - मुख्य विचार गोष्ठी (Main Seminar
3 - राष्ट्रीय विचार गोष्ठी (National Seminar)
4 - अन्तर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठी (International Seminar)

विचार गोष्ठी की उपयोगिता (Uses of Seminars) —

1- शिक्षा के ज्ञानात्मक तथा भावात्मक उच्च उद्देश्यो की प्राप्ति की जाती है।
2- प्रजातान्त्रिक मूल्यों का विकास होता है।
3- प्रस्तुतीकरण करने की क्षमताओ का विकास होता है।
4- सेमिनार प्रविधि शिक्षार्थी केन्द्रित होती है।
5- स्वतन्त्र अध्ययन को प्रोत्साहित करती है।
6- आलोचनात्मक चिन्तन का विकास होता है।
7- शिक्षार्थी मे सामाजिक तथा भावात्मक गुणो का विकास होता है।

विचार गोष्ठी की सीमाएँ —(Limitations Of Seminar) —

सेमिनार प्रविधि की निम्नलिखित सीमाये है—

1— किसी विषय के सभी प्रकरणो के लिये सेमिनार का आयोजन नही किया जा सकता है क्योकि कुछ प्रकरणो का स्वरूप सुनिश्चित होता है जैसे - विश्वसनीयता व वैधता। उन्ही प्रकरणो का चयन किया जाता है, जिन पर वाद-विवाद हो सके।
2- इस प्रविधि को सभी शिक्षा के स्तरों पर प्रयोग नही कर सकते है।
3- अन्त: प्रक्रिया सम्पूर्ण समूह मे होती है।
4- इस प्रविधि के वाद-विवाद काल मे कई समूह बनने की सम्भावना रहती है।

Scanned with CamScanner

C-3. B.Ed. 1st Year 2019-2021

समस्या समाधान विधि
Problem Solving Method

समस्या समाधान विधि से तात्पर्य तर्क द्वारा किसी समस्या का समाधान करने की प्रक्रिया से होता है। इस विधि में शिक्षण करते समय शिक्षक विद्यार्थीयो की समस्याओ को व्यवस्थित रूप से हल करने का प्रशिक्षण देता है। प्रयोजन विधि तथा समस्या समाधान विधि मे कुछ समानता प्रतीत होती है, इन दोनो ही विधियो मे समस्या को चिन्हित करके उसका समाधान खोजा जाता है परन्तु प्रयोजन विधि मे विद्यार्थी समस्या का समाधान करने के लिए क्रियात्मक प्रयास करते है, जबकि समस्या समाधान विधि मे वे समस्या का समाधान मानसिक स्तर पर खोजते है। अत: समस्या समाधान विधि मे क्रियात्मक पक्ष पर जोर नही दिया जाता है। समस्या समाधान विधि में वैज्ञानिक विधि का अनुसरण किया जाता है।

समस्या समाधान विधि की विशेषताएं — समस्या समाधान विधि की निम्नलिखित विशेषताएं है जो इस प्रकार है—

1- छात्र समस्याओ का स्वत: हल करना सीखते है।
2- उनमे निरीक्षण एवं तर्क शक्ति का विकास होता है।
3- वे सामान्यीकरण करने मे समर्थ होते है।
4- नवीन सन्दर्भ मे पुराने तथ्यो का प्रयोग करना सीखते है।
5- वे आँकड़ो के संकलन, मूल्यांकन एवं निष्कर्ष निकालने की प्रक्रियाओं से परिचित होते है।
6- उसमे मिल-जुलकर कार्य करने की भावना जाग्रत होती है।
7- यह प्रेरणात्मक विधि है।
8- यह Learning by doing पर आधारित है।

Scanned with CamScanner

समस्या समाधान विधि के सोपान (चरण) :- निःसंदेह

कोई भी व्यक्ति किसी समस्या के समाधान के लिए तभी प्रयास कर सकता है जबकि उसे उस समस्या की अनुभूति हो एवं वह समस्या को स्पष्ट शब्दो मे अभिव्यक्त करने तथा उसकी व्याख्या व विश्लेषण करने मे समर्थ हो। समस्या की व्याख्या व विश्लेषण से समस्या के कारणो का पता लगता है एवं सम्भावित समाधान को प्रस्तावित किया जा सकता है। तदोपरान्त व्यवहारिक परिस्थितियों में तथ्यो का संकलन व उनका विश्लेषण करके सम्भावित समाधान का परीक्षण किया जाता है एवं सही समाधान का स्थापन करके समस्या के अन्तिम समाधान को प्रस्तुत किया जाता है। अतः समस्या समाधान विधि मे विद्यार्थी उत्साह व रुचि के साथ सक्रिय रहते हुए जनतांत्रिक ढंग से समस्या के समाधानो पर मुक्त हृदय से तर्क, चिन्तन व मनन करके समस्या का समाधान करते है।

समस्या समाधान विधि मे निम्नांकित सात सोपानो का अनुसरण किया जाता है —

i- समस्या का चयन
ii- समस्या का प्रस्तुतीकरण
iii- तथ्यो का एकत्रीकरण
iv- परिकल्पना का निर्माण
v- समाधानात्मक निष्कर्ष पर पहुचना
vi- मूल्यांकन
vii- कार्य का आलेखन

समस्या समाधान विधि के सीमाएं — इस विधि के कुछ सीमाएं भी है जो इस प्रकार है —

i- इस विधि में समय एवं शक्ति का अपव्यय होता है।
ii- इस विधि में निष्कर्ष के गलत होने का भी भ्रम बना रह सकता है
iii- इस विधि के प्रयोग के लिए योग्य शिक्षको की आवश्यकता है।
iv- इस विधि मे क्रियात्मक पक्ष की अवहेलना कि जाती है।
v- यह विधि छोटी कक्षाओ मे उपयोगी नही है।

Scanned with CamScanner

C-3 B.Ed - 1st Year (2019-2021)

सहयोगी अधिगम
Cooperative Learning

वर्तमान युग प्रतियोगिता का युग है। इस युग मे प्रत्येक विद्यार्थी की समय सूची काफी संकीर्ण है। कक्षा में भी आजकल बच्चो में ईर्ष्या व द्वेषभाव देखने को मिलता है। अच्छा अधिगम अच्छे वातावरण मे ही हो पाता है। आजकल विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त करना और प्रतियोगिता में आने के बारे मे ही सोचते है। शिक्षण संस्थाओ की स्थिति काफी शोचनीय है। यहा वातावरण लोकतांत्रिक नही है।

सहयोगी अधिगम से तात्पर्य है विद्यार्थियो का एक दूसरे से समूह मे सीखना। इस प्रकार का अधिगम बहुत जरूरी है। यहाँ विद्यार्थी एक दूसरे के सहयोग से सीखते है। इसलिए इसे सहयोगी अधिगम कहते है। यहा शिक्षक और सभी विद्यार्थी मिलकर कार्य करते है। शिक्षक विद्यार्थी की अधिगम मे सहायता करते है। इस तरह का अधिगम विद्यार्थी में सामाजिक कौशल भी विकसित करता है। जिससे वह मिलकर कार्य कर सके। यहाँ सहयोग से सीखना ही एकमात्र सीखने की तकनीक है।

सहयोगी अधिगम मिलकर सीखने के सिद्धान्त पर आधारित है। यह सहयोग के सिद्धान्त "एक सबके लिए और एक के लिए सब" का ध्यान रखता है।

सहयोगी अधिगम के लाभ :- सहयोगी अधिगम के निम्नलिखित लाभ है-

1- इसमे सभी का विकास एवं सभी विद्यार्थी इससे प्रोत्साहित होते है।
2- विद्यार्थियो के सामाजिक कौशल विकसित होते है।
3- प्रत्येक विद्यार्थी अपने कार्य के लिए जवाबदेह होता है और उनमे आत्म विश्वास बढ़ता है।
4- इसमे समूह के सदस्य से बातचीत के अवसर बढ़ते है।
5- सभी सदस्य समूह मे मनोवैज्ञानिक समायोजन करते है।
6- भाषा का अधिगम और भी अर्थपूर्ण बनता है।
7- विद्यार्थियो की सामाजिक निपुणता बढ़ती है।
8- यह प्रत्येक को नेतृत्व का प्रशिक्षण प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

C-3 B.Ed. 1st Year (2019-2021)

सहयोगी अधिगम के सिद्धान्त (Principles of Co-operative Learning) :- सहयोगी अधिगम के निम्नलिखित सिद्धांत है।

1- सकारात्मक अन्तर निर्भरता :- विद्यार्थियो की सोच प्रतियोगितावादी नही होती है। यह किसी तरह की ईर्षा पर आधारित नही होती है। यह बिल्कुल भी व्यक्तिगत नही है। उनकी सारी सोच सहयोग पर आधारित होती है। यह समूह के लिए सोच होती है।

2- सामाजिक कौशल :- सामाजिक कौशलो मे सुधार एक मापदण्ड है जिस पर सहयोगी अधिगम आधारित है। समूह इस तरह कार्य करता है कि सभी सदस्य अपना योगदान देते है।

3- उत्तरदायित्व और जवाबदेही :- समूह मे सभी सदस्यो के उत्तरदायित्व और जवाबदेही होती है। सभी सदस्य उत्तरदायित्व को निभाते है। समूह में सभी साथ कार्य करते है पर प्रत्येक सदस्य जवाबदेह होता है।

4- नेतृत्व के लिए प्रशिक्षण :- प्रत्येक समूह में सभी सदस्य नेता बनते है। हर सदस्य परिस्थिति के अनुसार नेता बनता है। इसका लक्ष्य उन्हे एक सफल नेता बनाना है।

5- प्रोत्साहन का सिद्धान्त :- प्रत्येक को प्रोत्साहन देना ही एक मात्र आधार है जिस पर सहयोगी अधिगम का कार्य होता है। इसमे शिक्षक की भूमिका एक सहायक और निर्देशक की है।

6- समूह के साथ लगाव :- विद्यार्थी लम्बे समय तक समूह मे रहते है जिससे उनकी एक दूसरे के साथ समझ और लगाव बढ़ता है। वे यह सीखते है कि कार्य को बेहतर ढंग से कैसे करना है।

7- कार्य करने का आधार :- सभी विद्यार्थियो को समूह में अपनेपन का एहसास होता है। वे समूह का हिस्सा बनकर कार्य करते है। अगर समूह के एक सदस्य को पुरस्कार मिलता है तो सभी खुशी का अनुभव करते है।

8- समूह का कार्य :- समूह के प्रत्येक सदस्य समूह के कार्य को अपना कार्य मानकर करते है और वे कार्य को बिना किसी पक्षपात के करते है।

Scanned with CamScanner

C-3 B.Ed. 1st Year (2019-2021)

शिक्षण के सहायक उपागम
Supporting Approaches of Teaching

आज के प्रजातांत्रिक युग में सभी को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने, सभी को समानता, आदर एवं स्वतन्त्रता के समान अवसर उपलब्ध कराने जैसे प्रजातांत्रिक मूल्यों को बनाये रखने के लिए तथा मनोविज्ञान के व्यक्तिगत भिन्नता के सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए ऐसी शिक्षण विधाओं की आवश्यकता की गयी, जिसमें बाल शिक्षा के केन्द्र में हो।

बाल की रुचियों, क्षमताओं, दक्षताओं आदि के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था किये जाने की आवश्यकता अनुभव की गयी। वर्तमान में हमारी शिक्षा व्यवस्था को बाल केन्द्रित रूप में गठित किया गया जिससे शिक्षण के स्थान पर अधिगम को अधिक महत्व प्रदान किया गया है। इसी के अनुरूप पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों का गठन किया गया है। इन शिक्षण विधाओं में बाल की भूमिका प्रमुख होती है तथा शिक्षक शैक्षिक परिस्थितियों को गठित करने एवं संचालित करने की भूमिका निभाता है।

कक्षा अध्यापन में एक सफल अध्यापक निम्नलिखित उपागमों का प्रयोग करता है —

1- बाल-केन्द्रित शिक्षण उपागम
2- क्रिया तथा गतिविधि आधारित शिक्षण उपागम
3- सम्पूर्ण या आंशिक शिक्षण
4- सहभागी शिक्षण
5 — दक्षता आधारित शिक्षण
6 - शैक्षिक निदान
7 - उपचारात्मक शिक्षण
8- बहु कक्षा शिक्षण
9- बहुस्तरीय शिक्षण

Scanned with CamScanner